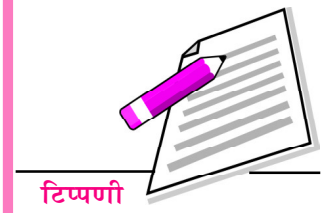

टिप्पणी

21

राजद्रोह

अब आप किसी राष्ट्र के समक्ष सशस्त्र विद्रोह और आतंकवाद जैसे खतरों के बारे में पढ़ेंगे। पिछले पाठों में आपने पढ़ा कि लोगों ने किस प्रकार मिलकर समुदाय का निर्माण करते हैं, जनपद बनाते हैं और किस प्रकार लोग राजा को चुनकर सेना का निर्माण करते हैं। आधुनिक युग में राजा के स्थान पर सरकारें लोगों के कल्याण के लिए कानून और नीतियाँ बनाती हैं। समाज में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो सरकार की नीतियों अथवा काम करने के तरीकों से सहमत नहीं होते। ये लोग एक समूह बनाकर सरकार के खिलाफ़ विद्रोह करते हैं। इस प्रकार के विरोध प्राय: शांतिपूर्ण आंदोलन से प्रारंभ होते हैं। लेकिन माँगें पूरी न होने पर हिसंक रूप ले लेते हैं। आप जानते हैं कि गांधीजी द्वारा आजादी के लिए सत्याग्रह आंदोलन प्रारंभ किया गया था। यह एक शांतिप्रिय आंदोलन था जिसमें अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए कहा गया था।

1947 में आजाद होने के साथ ही भारत को अनेक बाह्य व आंतरिक खतरों का सामना करना पड़ा है। उत्तर-पूर्व राज्यों में अनेक छोटे समूहों ने अपने लिए अलग राष्ट्र बनाने के लिए आंदोलन शुरू किए। यह आंदोलन हिंसक हो गए। इन लोगों ने अपनी माँगें और इच्छाएँ मनवाने की हथियार उठाए। इस प्रकार के कार्य जो देश और सरकार के विरुद्ध होते हैं, उन्हें विद्रोह कहा जाता है।

प्रस्तुत पाठ में हम राजद्रोह के बारे में जानेंगे और यह भी जानकारी प्राप्त करेंगे कि इन्होंने हमारे देश को किस प्रकार प्रभावित किया। सरकार राजद्रोह रोकने के लिए कैसे कदम उठाती है और कैसे इस कार्य के लिए सेना की मदद ली जाती है। आप राजद्रोह और आतंकवाद के बीच अंतर को भी जान पाएँगे।

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ पढ़ने के बाद आप:-

- राजद्रोह और आतंकवाद के बीच का अंतर जान पाएँगे;
- भारत और विश्व में हुए राजद्रोहों के बारे में वर्णन कर सकेंगे;

टिप्पणी

- राजद्रोह के कारण स्पष्ट कर सकेंगे;
- किसी देश द्वारा राजद्रोह के विरुद्ध उठाए जाने वाले कदमों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

21.1 राजद्रोह और आतंकवाद

राजद्रोह और आतंकवाद को एक-दूसरे का पर्याय समझा जाता है। किंतु इन दोनों में बहुत अंतर है। आतंकवाद एक नवीन संकल्पना है। आतंकवाद का कार्य लोगों को डराकर उन्हें आतंकवाद के कारणों का समर्थन के लिए तैयार करना होता है। राजद्रोह की शुरूआत एक राजनीतिक लक्ष्य और विचारधारा के रूप में होती है।

राजद्रोह और आतंकवाद में अंतर

राजद्रोह	आतंकवाद
• लोग समूह का हिस्सा होते हैं और इसे लोागों का युद्ध कहा जाता है।	आतंकवाद में आम लोग शामिल नहीं होते अपितु एक नेता के अंतर्गत छोटे समूह को आंतकी समूह कहते हैं।
• राजनीतिक इच्छा सरकार को गिराना होता है।	इसके राजनीतिक लक्ष्य हो सकते हैं परंतु प्रमुख लक्ष्य लोगों में दहशत फैलाना है।
• सरकार के विरोध में हिंसा करते हैं।	आबादी में हिंसा फैलाना
• समूह से सहानुभूति रखने वाले अपने लोगों से पैसा और सहयोग प्राप्त करना होता है।	बाह्य शक्तियों से धन और सहयोग प्राप्त करना है। कुछ देश भी आतंकवाद को सहयोग देते हैं।

यहां यह जानना भी आवश्यक है कि राजद्रोही स्वयं को 'राजद्रोही' या 'गुरिल्ला' कहकर बुलाते हैं। आतंकवादी स्वयं को आतंकवादी नहीं कहते हैं। वह अपने आपको सैन्य या राजनीतिक शब्दावली में 'स्वतंत्रता सेनानी', 'सैनिक' या 'कार्यकर्त्ता' कहते हैं।

आइए राजद्रोह के बारे में जानते हैं तथा आतंकवाद और राजद्रोह के बीच अंतर भी जानेंगे।

- **राजद्रोह** - ऐसा विद्रोह जो किसी एक देश की राष्ट्रीय सीमा में हो और उसमें देश के लोग शामिल होते हैं। उसे राजद्रोह कहते हैं। राजद्रोह की कोई मानक परिभाषा नहीं है। ऐसे ही आतंकवाद की भी प्रमाणिक परिभाषा नहीं है। किन्तु राजद्रोह राजनीतिक इच्छाओं के लिए होता है। आतंकवाद का कार्य हिंसक कार्य करना है। राजद्रोह को एक हिंसक प्रयास कहा जा सकता है जिसका उद्देश्य एक देश की सरकार का विरोध करना है। यह विरोध उन देश के लोगों द्वारा किया जाता है। राजद्रोह में सशस्त्र समूह अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हिंसक प्रयास करता है।

टिप्पणी

- **नागरिक प्रतिरोध** - यह एक राजनीतिक क्रिया है जो कि अहिंसक होती है। यह लोग समूह बनाकर सरकार के सम्मुख चुनौती प्रस्तुत करते हैं। प्रदर्शन, हड़ताल, बहिष्कार, विरोध आदि। इसके तरीके होते हैं- ये सभी तरीके शांतिप्रिय होते हैं। भारत का आजादी आंदोलन इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।
- **गुरिल्ला युद्ध** - यह युद्ध सरकारी बलों के विरुद्ध किया जाता है। इस प्रकार की युद्ध पद्धति में छोटे समूह हथियारों के साथ सैन्य व्यूह रचना बनाकर सरकार का विरोध करते हैं। इस प्रकार की पद्धति में शस्त्रधारी लोग छोटे समूह बनाकर तीव्र गति से सरकार के साथ लड़ते हैं। उन्हें स्थानीय लोगों की मदद की जरूरत होती है। वह कभी भी सेना से सीधे नहीं टकराते अपितु सेना की छोटी टुकड़ियों, भवनों तथा बसों पर हमला करते हैं। गुरिल्ला युद्ध पद्धति का सर्वाधिक सफल प्रयोग वियतनाम में अमेरिकी सेना के विरुद्ध होचीमिन्ह के द्वारा किया गया था। इसके पश्चात् अमेरिकी सेना वियतनाम छोड़कर चली गयी। गुरिल्ला युद्ध पद्धति को अनियमित युद्ध भी कहते हैं।
- **नक्सलवादी/माओवादी** - नक्सलवादी, माओवादी, कट्टरपंथी साम्यवादी का एक समूह है जो माओवादी राजनीतिक विचारधारा और सोच का समर्थन करते हैं। नक्सल शब्द की शुरुआत पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी जिले के नक्सलवाड़ी गाँव से हुई थी। इसी स्थान से आंदोलन की शुरुआत हुई थी। सभी नक्सलवादी समूहों की उत्पत्ति CPI (ML), भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी, मार्क्सवादी, लेनिनवादी सोच से मानी जाती है। भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी) माओवाद का समर्थन करती है। इनका उद्देश्य लोगों की लड़ाई के माध्यम से भारतीय सरकार को उखाड़ फेंकना है क्योंकि वे लोकतंत्र के वर्तमान स्वरूप में विश्वास नहीं रखते।
- नीचे दिया गया चित्र दर्शाता है कि किस प्रकार स्पेन के लोगों ने नेपोलियन द्वारा स्पेन पर आक्रमण करने का विरोध किया। स्पेन के लोग किसी बाहरी व्यक्ति का शासन नहीं चाहते थे और नेपोलियन बाहर का व्यक्ति था।

मानचित्र 21.1 : 1808 में स्पेन में नेपोलियन के विरुद्ध गौरिल्ला प्रतिरोध

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 21.1

1. राजद्रोह का अर्थ सरल शब्दों में लिखिए।
2. भारत में नक्सलवाद का जन्म कहां हुआ था?
3. माओवादी किसे कहते हैं?

इस विषय से जुड़ी शब्दावली से परिचित होने के बाद आइए हम भारत में आतंकवाद और राजद्रोह के उदय के बारे में जानते हैं।

21.2 विश्व में राजद्रोह

आइए ऐसे देशों के बारे में जानते हैं जहां राजद्रोह हुआ हो। यहाँ कुछ देशों के बारे में बताया गया है। आप इन सब देशों को एक क्रियाकलाप के माध्यम से पहचान पाएँगे।

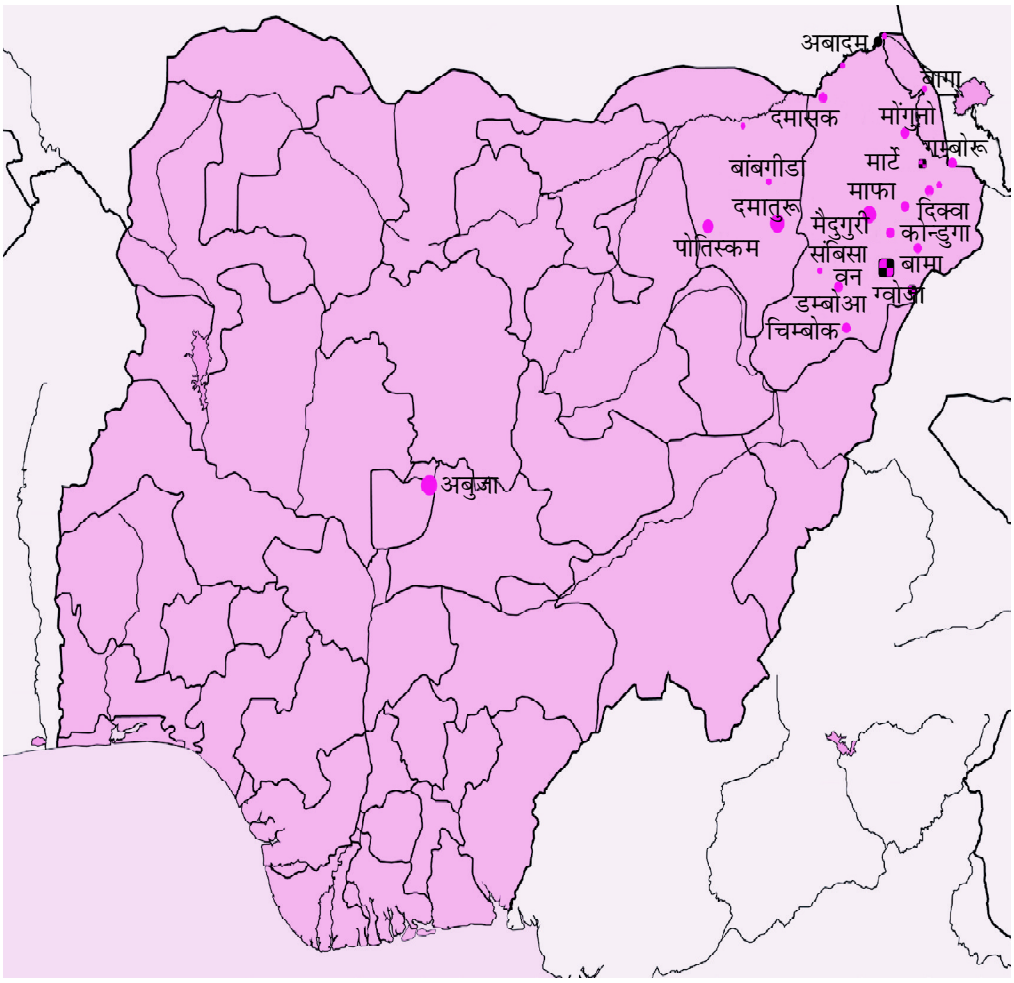

चित्र 21.1 : नाइजीरिया – बोको हराम

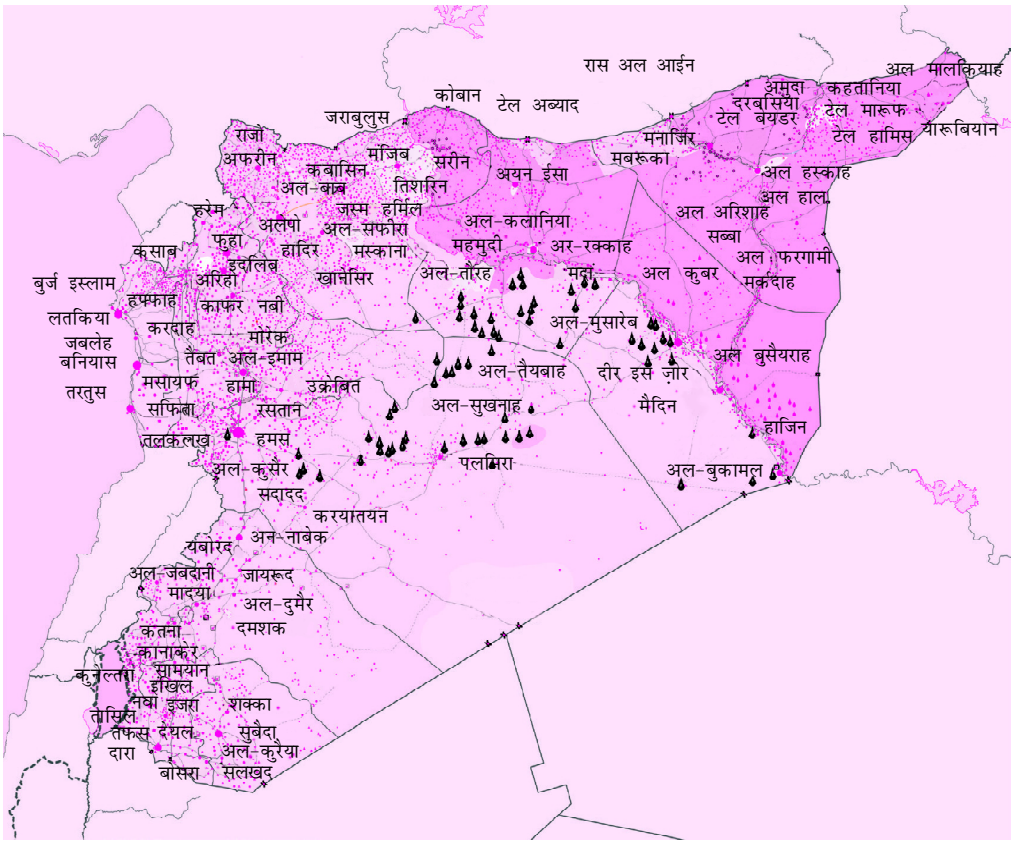

चित्र 21.2 : सीरिया - गृह युद्ध

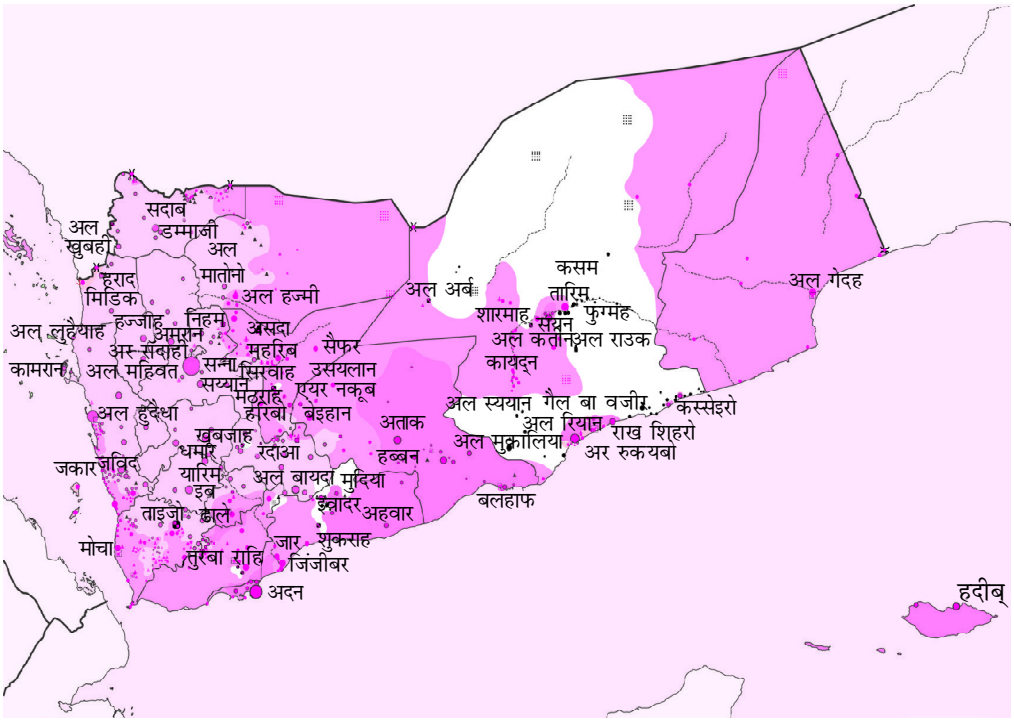

चित्र 21.3 : यमन - गृह युद्ध

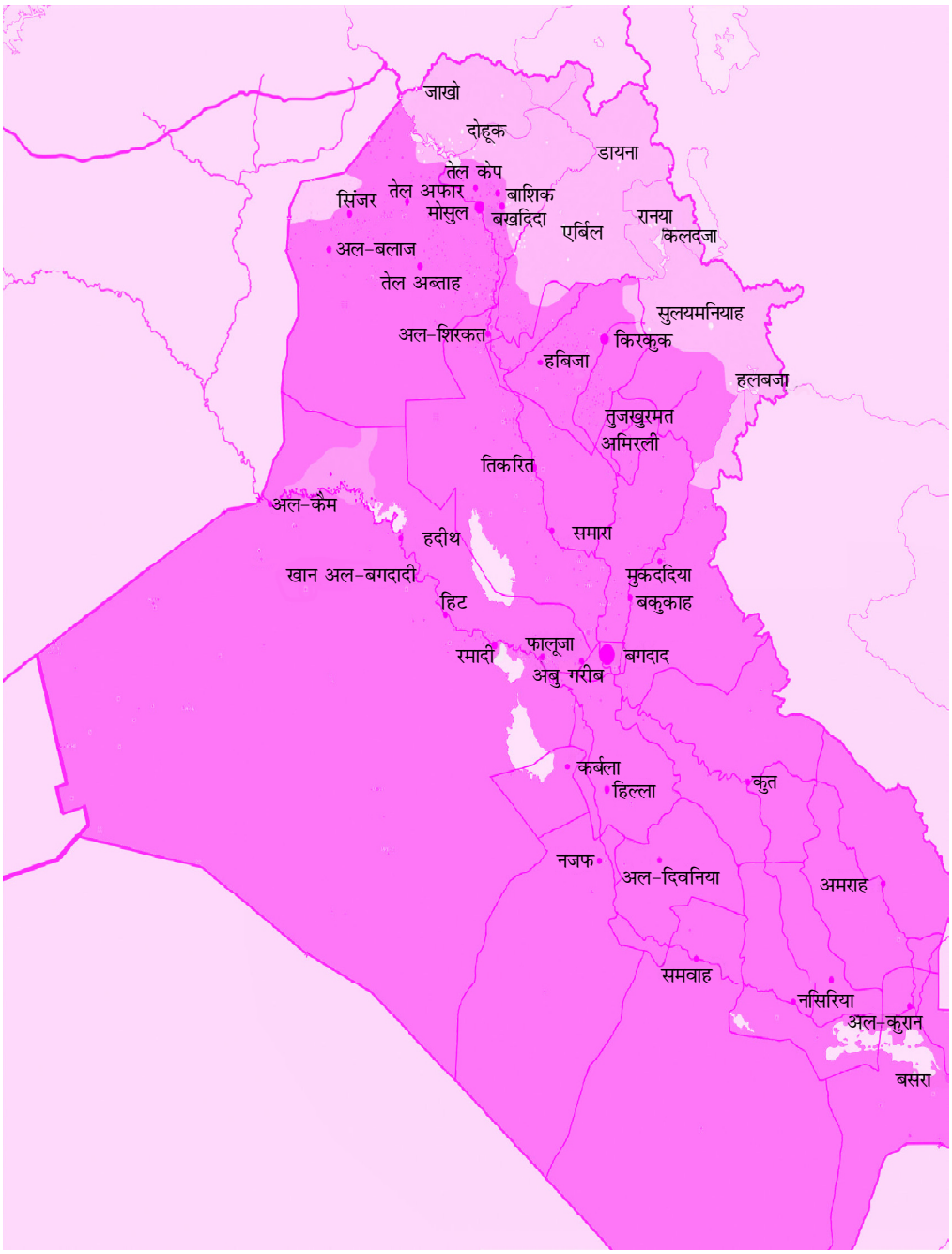

चित्र 21.4 : इराक - ISIS

क्रियाकलाप 21.1

1. मानचित्र में दिखाए गए उपरोक्त संघर्षों से जुड़े महाद्वीपों के नाम लिखिए।
2. इंटरनेट का उपयोग करते हुए अन्य देशों के नाम लिखिए जहाँ लोगों का विद्रोह हुआ हो।

टिप्पणी

21.2.1 भारत में राजद्रोह

भारत की भौगोलिक सीमा के अंदर हुए संघर्षों में जहाँ भारतीय नागरिक शामिल हुए हों उन्हें आंतरिक संघर्ष कहा जाता है। इस प्रकार के संघर्ष में मुख्यत: लोगों का एक समूह सरकार के विरुद्ध हथियारों और हिंसा का प्रयोग करता है। आजादी के पश्चात् से हमारे देश में आंतरिक सुरक्षा के लिए दो मुख्य समस्याएँ हैं- जिनमें जम्मू व कश्मीर में आतंकवाद की समस्या तथा उत्तर-पूर्व प्रदेशों में संगठित राजद्रोह।

क) जम्मू व कश्मीर में आतंकवाद - पाकिस्तान का उद्भव द्वि-राष्ट्र के सिद्धांत पर हुआ है। यह विभाजन भारतीय आजादी अधिनियम 1947 के अनुसार हुआ था। दोनों देशों की बीच सीमा रेखा निश्चित करने के लिए सर साइरिल रेडिक्लिफ की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की गई थी। सारी देसी रियासतें किसी भी देश में मिलने के लिए स्वतंत्र थी। प्रारंभ में जम्मू व कश्मीर के महाराज किसी भी देश के साथ नहीं मिले। किंतु पाकिस्तान ने अपनी ओर से एक बड़ा मिशन ऑपरेशन गुलमर्ग प्रारंभ कर दिया और कुछ हमलावर जम्मू व कश्मीर में शांति भंग के लिए भेजे। इसके बाद पाकिस्तानी सेना भेज कर जम्मू और कश्मीर पर कब्जा करने की योजना बनाई। तत्पश्चात् महाराजा हरिसिंह ने 26 अक्टूबर 1947 को अंगीकार पत्र पर हस्ताक्षर कर जम्मू व कश्मीर का भारत में विलय कर दिया। भारतीय सेना ने श्रीनगर हवाई अड्डे पर पहुँचकर जम्मू व कश्मीर के लोगों की सुरक्षा की। भारतीय सेना ने आक्रमणकारियों को भगा दिया और बड़ी संख्या में उनके सैनिक हताहत हुए। 5 अगस्त 2019 को भारत सरकार ने जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली धारा 370 को हटा दिया तथा जम्मू-कश्मीर को दो संघ शासित क्षेत्रों जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में बाँट दिया।

इसके बाद पाकिस्तान आक्रमणकारियों तथा आतंकवादियों के सहारे जम्मू व कश्मीर में घुसपैठ की कोशिश करता रहता है। उसका प्रमुख उद्देश्य पूरे राज्य में अशांति फैलाकर उसे अपने देश में मिलाना है।

ख) उत्तर-पूर्व में राजद्रोह - जम्मू-कश्मीर की तुलना में उत्तर-पूर्व में राजद्रोह के कारण ढूँढ़ना कठिन कार्य है। हमें यह भी जानना आवश्यक है कि भारत के उत्तर-पूर्व प्रदेशों से तात्पर्य सात प्रदेशों से है- असम, नागालैंड, मिजोरम, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा और अरूणाचल प्रदेश शामिल है। इन सात राज्यों में अलग-अलग वंशावली, संस्कृति, भाषा, आर्थिक स्थिति, जाति और राजनीतिक रिवाज है। भारत के अन्य प्रदेशों के विपरीत यहाँ हर राज्य की अलग-अलग समय पर राज्य का दर्जा मिला और भारतीय संघ का हिस्सा बने। सर्वप्रथम मणिपुर में राजद्रोह प्रारंभ हुआ। मणिपुर में छोटे-छोटे संगठित समूहों ने भारत से पूर्ण आजादी के लिए विद्रोह किया। इसके पश्चात् उल्फ (ULFA) और नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड (NDFB) ने असम में, मिजोरम में मिजो नेशनल फ्रंट और नागालैंड में नागा नेशनल काउंसिल ने आजादी की माँग की। नीचे दिए गए नक्शे में भारत के उत्तर पूर्व प्रदेशों को पहचानकर उनका भारत में राज्य बनने का वर्ष लिखिए।

टिप्पणी

भारत के उत्तर पूर्व राज्य (नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा, मणिपुर, असम आदि) में उग्रवाद और राजद्रोह के अनेक कारण हैं। इनमें से कुछ कारण निम्नलिखित हैं-

- लंबे समय तक राज करने वाले अंग्रेजों ने कभी भी जनजातियों को समाज की मुख्य धारा में शामिल करने का प्रयास नहीं किया। इससे उनके अंदर नफरत, अलगाव वैमनस्य की भावना ने जन्म लिया। यही भावना उत्तरपूर्व के क्षेत्रों मे राजद्रोह का कारण बन गई।
- इस समस्या के मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और धार्मिक पक्ष भी हैं।
- व्यापक गरीबी, बेरोजगारी, युवाओं किसानों और कामगारों के प्रति लापरवाही तथा भावनात्मक अलगाव कुछ मुख्य कारण हैं।

ग) **भारत में वामपंथी आतिवाद** - वामपंथी अतिवाद भारत में सशस्त्र राजद्रोह के होने का एक प्रमुख तत्व है। वामपंथी राजद्रोही भारतीय संघ के खिलाफ विद्रोह करके एक साम्यवादी देश का निर्माण करना चाहते हैं। अन्य राजद्रोहों की तरह ही वामपंथी राजद्रोह को भी ब्रिटिश शासनकाल से जोड़कर देखा जा सकता है। भारत में साम्यवादी राजनीतिक आंदोलन, जनजातीय अशांति, मजदूर और किसानों की समस्या ब्रिटिश काल में ही शुरू हुई थी। इस तरह के राजद्रोह से छत्तीसगढ़, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, झारखंड और बिहार प्रदेश पीड़ित है।। इस संपूर्ण क्षेत्र को जहाँ नक्सलवादी सक्रिय हैं, Red Corrider अर्थात् लाल गलियारा कहा जाता है।

- यह लाल गलियारा लगभग 170 जिलों में फैला हुआ है। इन जिलों में आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़ी हुई जनजातियों निवास करती है। इसी कारण यहाँ का युवा वर्ग आंदोलन में शामिल होने को तैयार रहता है। इस क्षेत्र में विशाल जंगल होने के कारण नक्सल केंद्र और राज्य सुरक्षा बलों के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध पद्धति का प्रयोग कर पाते हैं। आपको नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की जानकारी मानचित्र 21.5 से मिलेगी।
- भारतीय सरकार ने इन राजद्रोहियों से विकास की नीति के माध्यम से सख्ती से निपटने का तरीका अपनाया है। यह नीति अपना कार्य सफलतापूर्वक कर रही है और वर्तमान समय में नक्सल प्रभावित अतिवाद काफी हद तक नियंत्रण में आया है।

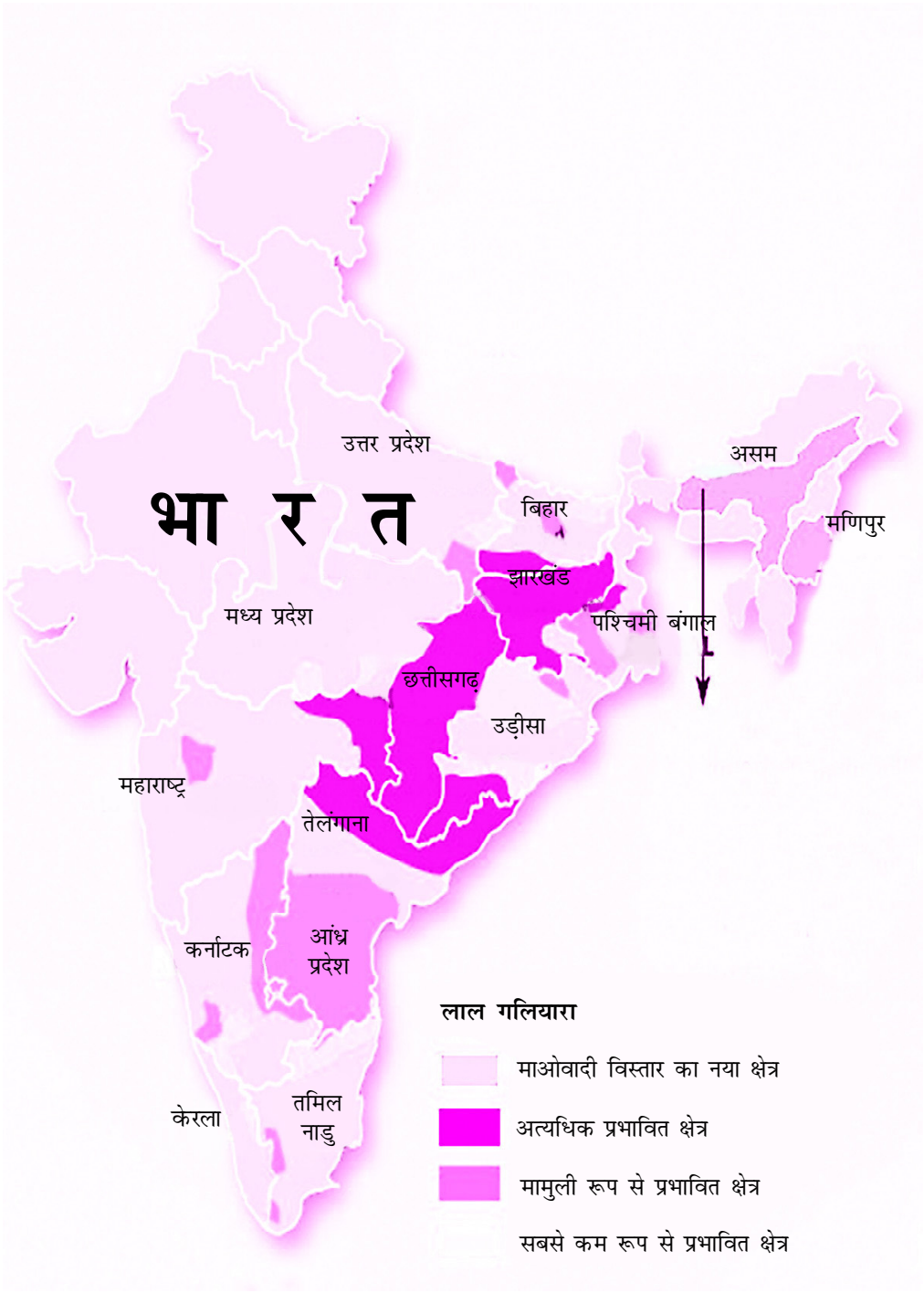

चित्र 21.5 : माओवादी व नक्सल प्रभावित क्षेत्र

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 21.2

1. भारत के उन क्षेत्रों का नाम लिखिए जो विद्रोह से प्रभावित है।

2. ULFA का पूरा नाम लिखिए।

21.3 राजद्रोह के कारण

संपूर्ण विश्व में प्राचीन राजाओं के विरुद्ध विद्रोह हुए हैं। वर्तमान समय में यह विद्रोह सरकारों के विरुद्ध होते हैं। इस प्रकार के विद्रोह का मुख्य कारण लोगों का नाखुश होना है। राजद्रोह पर किए गए कुछ शोधकार्यों के अनुसार राजद्रोह के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं।

(क) शेष भारत से अलग जातीय, भाषायी तथा सांस्कृतिक विभिन्नताएँ।

(ख) सरकार द्वारा लोगों की समस्याओं पर उचित ध्यान न दे पाना।

(ग) प्रदेशों के बीच सीमा विवाद।

(घ) स्थानीय लोगों तथा अवैध शरणार्थियों के मध्य विवाद।

5. पड़ोसी देशों से सहायता मिलना।

21.4 राजद्रोह प्रतिकार

हम राजद्रोह के कारण जान चुके हैं, आइए अब हम इसका प्रतिकार करने के उपायों के बारे में भी जानते हैं। वे कुछ कदम उठाकर विद्रोह के कारणों को दूर करते हैं। इन कदमों अथवा उपायों को राजद्रोह प्रतिकार ऑपरेशन (Counter Insurgency Operations - COIN) भी कहा जाता है। ये निम्न हैं-

- यह सुनिश्चित करना कि राजद्रोहियों को लोगों का सहयोग न मिले। इसका अर्थ है कि सरकार लोगों से बात करके उनकी समस्याओं का शीघ्र निराकरण करेगी। सरकार को अनेक विकास कार्य जैसे, स्कूल बनवाना, गाँव/शहरों में स्वास्थ्य केंद्र खोलना तथा उनको सुचारू रूप से चलाना चाहिए।
- सैन्य बल का प्रयोग करके राजद्रोहियों को समाप्त कर देना चाहिए।
- सैन्य कार्रवाई करने वाले बलों में सेना, असम राइफल्स (AR), राष्ट्रीय राइफल्स (RR), केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और स्थानीय पुलिस है।

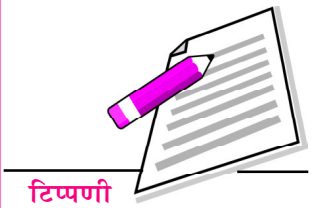

टिप्पणी

- राजद्रोही नेताओं से बात करके उनके साथ एक समझौते पर आना भी सरकार का एक महत्वपूर्ण कार्य है। भारतीय सरकार ने मिजो राजद्रोहियों, ULFA तथा अन्य विद्रोह करने वाले समूहों से बात की। फिलहाल भारत सरकार नगा राजद्रोहियों से बात करके समझौते पर आने का प्रयास कर रही है

- सेना ने उत्तर पूर्व में राजद्रोह प्रतिकार युद्ध विद्यालय की स्थापना की है। यहाँ वह अपने सैनिकों को अस्त्र शस्त्र का प्रशिक्षण देते हैं। इसके साथ ही यहां विदेशी सेनाओं जैसे अमेरिका, ब्रिटेन और एशिया के अन्य देशों की सेना को भी प्रशिक्षित करती है। भारतीय सेना को आतंकवाद और राजद्रोह को समाप्त करने में महारत हासिल है।

आपने क्या सीखा

- आतंकवाद और राजद्रोह के बारे में पढ़ा और समझा।
- अपने माता-पिता और शिक्षकों से इस विषय पर निर्भीक होकर चर्चा करें।
- इस विषय पर अपने विचारों को स्पष्ट कर लिख सकेंगे।
- आप राजद्रोह और आतंकवाद को समाप्त करने की योजना बनाइए।

पाठांत प्रश्न

1. भारत में राजद्रोह के क्या कारण हैं?
2. राजद्रोह प्रतिकार से आप क्या समझते हैं?
3. आतंकवाद पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. आतंकवाद और राजद्रोह का अंतर स्पष्ट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1

1. किसी देश के लोगों द्वारा अपनी सरकार के विरुद्ध हिंसक प्रयास
2. पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी जिले का नक्सलवादी गाँव।

टिप्पणी

3. माओवादी उन कट्टरपंथी लोगों का समूह है जो माओवाद की राजनीतिक विचारधारा का समर्थन करते हैं।

21.2

1. जम्मू-कश्मीर व उत्तर-पूर्व राज्य।

2. यूनाईटेड लिब्रेशन फ्रंट फॉर असम (United Liberation Front for Assam)